Naraziyon Ka Ilaaj (Hindi) सफ़ह़ात 30

नाराज़ियों का इलाज

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**नाराज़ियों का इलाज**"

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नाराज़ियों का इलाज

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 27 सफ़ह़ात का रिसाला : "**नाराज़ियों का इलाज**" पढ़ या सुन ले उसे दुन्या व आख़िरत के रन्जो ग़म से बचा और दोनों जहां की ख़ुशियां नसीब फ़रमा ।

اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "**अल्लाह** पाक की ख़ात़िर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब आपस में मिलें और मुसाफ़ह़ा करें (या'नी हाथ मिलाएं) और नबी (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर **दुरूदे पाक** भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएं ।"

(مُسْنَدِ اَبو يَعْلٰى ج۳ ص۹۵ حديث ۲۹۵۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

इमामे ह़सन व इमामे ह़ुसैन की सुल्ह़ का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ

सह़ाबिये नबी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मुझे पता चला कि ह़ज़राते इमामे ह़सन व इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا के दरमियान कोई नाराज़ी हो गई है तो मैं ने नवासए रसूल ह़ज़रते इमाम ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से अ़र्ज़ की : लोग आप दोनों साह़िबान को अपना पेश्वा (या'नी सरदार) मानते हैं । आप अपने भाईजान ह़ज़रते इमाम ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के पास जा कर उन से

सुल्ह़ कर लीजिये क्यूं कि आप उन से उ़म्र में छोटे हैं। इस पर ह़ज़रत इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : अगर मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमाने आ़लीशान न सुना होता कि "(सुल्ह़ में) **पहल करने वाला जन्नत में भी पहले जाएगा**"(1) तो मैं ज़रूर उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता मगर मैं येह पसन्द नहीं करता कि उन से पहले जन्नत में जाऊं। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रत इमामे ह़सन رَضِیَ اللهُ عَنْه के पास ह़ाज़िर हुवा और उन्हें सारा वाक़िआ़ बताया तो नवासए रसूल ह़ज़रत इमामे ह़सन رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : صَدَقَ اَخِیْ या'नी "मेरे भाई ने सच कहा" फिर आप खड़े हुए और अपने भाई ह़ज़रत इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه के पास आ कर उन से सुल्ह़ कर ली। (ذخائر العقبیٰ ص ۲۳۸ سے خلاصہ)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सदक़ा ह़सन हुसैन का या रब्बे मुस्त़फ़ा
कर दे मुआ़फ़ हर ख़त़ा या रब्बे मुस्त़फ़ा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب   صَلَّی اللهُ عَلٰی محمَّد

जन्नत की त़रफ़ पहल करने का नुस्ख़ा

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! इस ईमान अफ़रोज़ वाक़िए से दर्स मिला कि अगर किसी से नाराज़ी हो भी जाए तो हमें दिल मज़बूत कर के सुल्ह़ करने के लिये पहले आगे बढ़ जाना चाहिये, मेरे आक़ा आ'ला

(۱): الزھد ص ۲۰۳ حدیث ۷۲٦ ۔

हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक मरतबा आपस में नाराज़ दो भाइयों को सुल्ह कर लेने की तरग़ीब देते हुए फ़रमाया : "आप दोनों में से जो मिलने (या'नी सुल्ह करने) में पहल करेगा वोह जन्नत की त़रफ़ पहल करेगा ।" (हयाते आ'ला हज़रत, जि. 1, स. 358 से ख़ुलासा)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ على محمَّد

शैत़ान आपस में लड़वाता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! शैत़ान मरदूद मुसल्मानों में फूट डलवाता, लड़वाता और क़त्लो ग़ारत गरी करवाता है नीज़ इन्हें **सुल्ह** (PEACE) पर आमादा ही नहीं होने देता । बल्कि ऐसा भी होता है कि कोई नेक दिल शख़्स बीच में पड़ कर उन में **सुल्ह** करवा भी दे तब भी त़रह़ त़रह़ के वस्वसे डाल कर उन्हें उक्साता और भड़काता है । शैत़ाने मक्कार के वार से ख़बरदार करते हुए पारह 15 **सूरए बनी इसराईल** की 53वीं आयत में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक शैत़ान लोगों के दरमियान फ़साद डालता है ।

अल्लाह पाक पारह 7 **सूरतुल माइदह** आयत 91 में फ़रमाता है :

اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : शैत़ान तो येही चाहता है कि शराब और जूए के ज़रीए तुम्हारे दरमियान दुश्मनी और बुग़्ज़ो कीना डाल दे ।

सब सुल्ह़ो सफ़ाई के साथ रहें

जिन घरों में आपसी नाराज़ियों का सिल्सिला हो, मां बेटी, बाप बेटे, भाई बहन, सास बहू, नन्द भावज और दीगर रिश्तेदारों में आपस के अन्दर नाराज़ियां हों, पड़ोसियों के साथ अनबन हो, दोस्तों में लड़ाई ठन गई हो, ख़ानदान व क़बीले आपस में टकरा गए हों, बाज़ार में जो दुकानदार आपस में एक दूसरे की काट में मसरूफ़ हों उन सब मुसल्मानों को **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये पक्की सुल्ह़ कर के मिलजुल कर शैत़ान के फूट डलवाने वाले तबाहकार वार को बेकार बना देना चाहिये, यक़ीनन आपस के फ़सादात में दुन्या व आख़िरत के बे शुमार नुक़्सानात हैं। जो आ़शिक़ाने रसूल आख़िर तक येह रिसाला पढ़ या सुन लेंगे तो اِنْ شَآءَ الله आपसी नाराज़ियों से बचने और मुआ़फ़ी व दर गुज़र से काम लेने का ज़ेह्न बन जाएगा।

ग़ुस्सा फ़साद की जड़ है

बात बात पर जज़्बात में आ जाने वाला ग़ुसीला (या'नी ग़ुस्से वाला) शख़्स अक्सर फ़सादात का बाइ़स बन जाता है, ग़ुस्से वालों को ख़बरदार हो जाना चाहिये कि नफ़्स के सबब आने वाले ग़ुस्से में बेक़ाबू हो कर **अल्लाह** करीम की ना फ़रमानी वाला काम कर के कहीं जहन्नम के गहरे गढ़े में न जा पड़ें।

ग़ुस्से की ता'रीफ़ (DEFINITION)

ग़ज़ब या'नी "ग़ुस्से" के मा'ना हैं : ثَوَرَانُ دَمِ الْقَلْبِ اِرَادَةَ الْاِنْتِقَام। या'नी "बदला लेने के इरादे के सबब दिल के ख़ून का जोश मारना।" (المفردات ص٦٠٨)

ह़ज़रते अलह़ाज मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "ग़ज़ब

या'नी **ग़ुस्सा** नफ़्स के उस जोश का नाम है जो दूसरे से बदला लेने या उसे दफ़्अ़ (या'नी दूर) करने पर उभारे।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 655)

जहन्नम का मख़्सूस दरवाज़ा

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "जहन्नम का एक दरवाज़ा है, जिस से वोही लोग दाख़िल होंगे जिन का **ग़ुस्सा अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी के बा'द ही ठन्डा होता है।" (شعب الایمان ج٦ ص٣٢٠ حدیث ٨٣٣١)

सुन लो ! नुक़्सान ही होता है बिल आख़िर उन को
नफ़्स के वासिते "ग़ुस्सा" जो किया करते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 294)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب   صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

मालिक बिन दीनार के ग़ुस्सा पी जाने की बरकत (वाक़िआ़)

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने एक मकान किराए (या'नी रेन्ट, Rent) पर लिया। उस मकान से बिल्कुल मिला हुवा एक यहूदी का मकान था। वोह यहूदी दुश्मनी की बुन्याद पर "परनाले" (या'नी छत का पानी बाहर गिराने की मोरी) के ज़रीए गन्दा पानी आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के मुबारक मकान में डालता रहता। मगर आप ख़ामोश ही रहते। आख़िर कार एक दिन उस ने ख़ुद ही आ कर अ़र्ज़ की : जनाब ! मेरे परनाले से गिरने वाली गन्दगी की वज्ह से आप को कोई शिकायत तो नहीं ? आप ने बड़ी नरमी के साथ फ़रमाया : "परनाले से जो गन्दगी गिरती है उस को झाड़ू दे कर धो डालता हूं।" उस ने कहा : आप को इतनी तक्लीफ़ होने के बा वुजूद **ग़ुस्सा** नहीं

आता ? फ़रमाया **:** आता तो है, मगर पी जाता हूं क्यूं कि (कुरआने करीम के पारह 4 **सूरए आले इमरान** आयत 134 में) ख़ुदाए रह़मान का फ़रमाने आ़लीशान है **:**

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾ۚ

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले हैं और **अल्लाह** नेक लोगों से मह़ब्बत फ़रमाता है।

जवाब सुन कर वोह यहूदी मुसल्मान हो गया। (تذكِرةُ الاولياء ص ٤٠)

निगाहे वली में वोह तासीर देखी

बदलती हज़ारों की तक़्दीर देखी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ على محمَّد

गुस्से से बुग़्ज़ो कीना पैदा होता है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! नरमी की कैसी बरकतें हैं ! नरमी से मुतअस्सिर हो कर वोह यहूदी मुसल्मान हो गया। गुस्से की तबाह कारियों में से येह भी है कि इस से बुग़्ज़ो कीना (या'नी अ़दावत व दुश्मनी) पैदा होता है जिस से बा'ज़ अवक़ात क़त्लो ग़ारत गरी तक भी नौबत पहुंच जाती है।

कीने की ता'रीफ़ (DEFINITION)

اَلْحِقْدُ : اَنْ يُّلْزِمَ نَفْسَهٗ اسْتِثْقَالَ اَحَدٍ وَّ النِّفَارَ عَنْهُ ، وَ الْبُغْضَ لَهٗ وَ اِرَادَةَ الشَّرِّ

या'नी "किसी शख़्स के ख़िलाफ़ दिल में नफ़रत, ना गवारी और दुश्मनी व बुग़्ज़ रखना और उस का बुरा चाहना कीना कहलाता है।" (الحديقة الندية ج٣ ص٧٨)

कीना व अ़दावत की तबाह कारियां पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से लरज़िये :

मग़्फ़िरत में रुकावट

मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं कि **सरकारे** दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "लोगों के आ'माल हर हफ़्ते में दो बार पेश किये जाते हैं या'नी पीर और जुमे'रात के दिन, फिर अ़दावत रखने वाले दो भाइयों के इ़लावा हर मोमिन को बख़्श दिया जाता है और कहा जाता है : इन दोनों को छोड़ दो यहां तक कि मिल जाएं ।"

(مسلم ص١٣٨٨ حديث ٢٥٦٥)

अ़दावत रखने वाले की शामत

सह़ाबिये नबी ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि नबियों के सरदार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "शा'बान की पन्दरहवीं शब में **अल्लाह** पाक अपने बन्दों को रह़मत की नज़र से देखता और सब को बख़्श देता है लेकिन मुश्रिक व अ़दावत रखने वाला नहीं बख़्शा जाता ।" (ابن ماجه ج٢ ص١٦١ حديث ١٣٩٠)

बिला वज्हे शर्ई क़त्ए़ तअ़ल्लुक़ गुनाह है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! हुक्मे शरीअ़त के बग़ैर फ़क़त़ ज़ाती नाराज़ी की वज्ह से मुसल्मानों का एक दूसरे से तअ़ल्लुक़ात ख़त्म कर देना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "मुसल्मान से बिला वज्हे शर्ई कीना व बुग़्ज़ रखना ह़राम है और बिला मस्लह़ते

शर्इय्या तीन दिन से ज़ियादा तर्के सलामो कलाम (या'नी सलाम व बातचीत छोड़ देना) भी ह़राम है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 6, स. 526) ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** करीम के प्यारे नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "किसी मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि अपने भाई को तीन दिन से ज़ियादा छोड़े, जिस ने तीन दिन से ज़ियादा छोड़ा और मर गया **तो जहन्नम में दाख़िल हुवा।**" (ابو داؤد ج ٤ ص ٣٦٤ حديث ٤٩١٤)

तीन क़िस्म के अफ़राद

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا कहते हैं कि **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "तीन क़िस्म के अफ़राद की नमाज़ें उन के सर से एक बालिश्त भी नहीं उठतीं ﴾1﴿ क़ौम का वोह इमाम जिसे लोग पसन्द नहीं करते ﴾2﴿ वोह औ़रत जिस ने इस ह़ालत में रात गुज़ारी कि उस का शौहर नाराज़ हो ﴾3﴿ वोह दो भाई जो (शरीअ़त की इजाज़त के बग़ैर) आपस में नाराज़ हैं।" (اِبن ماجه ج ١ ص ٥١٦ حديث ٩٧١)

ऐ़ब छुपाने की फ़ज़ीलत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! बिला इजाज़ते शर्ई आपस की नाराज़ी के बाइ़स उ़मूमन दोनों त़रफ़ के अफ़राद के माबैन (या'नी आपस में) बद गुमानियों, ग़ीबतों, चुग़्लियों और तोह़मतों वग़ैरा जैसे जहन्नम में पहुंचाने वाले गुनाहों का सिल्सिला रहता है। आपस की नाराज़ियों के बाइ़स एक दूसरे के **ऐ़ब उछालने** का गुनाह भी बहुत किया जाता है लिहाज़ा सख़्त एह़तियात़ की ह़ाजत है। अगर किसी मुसल्मान का ऐ़ब मा'लूम हो जाए तो उसे छुपा देना ज़रूरी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुसल्मान के **ऐ़ब** छुपाने में बड़ा

सवाब मिलता है जैसा कि ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ عَنْہ से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने किसी का **पोशीदा** (या'नी छुपा हुवा) **ऐ़ब** देख कर छुपाया तो येह ऐसा है गोया उस ने ज़िन्दा दफ़्न की हुई बच्ची को ज़िन्दा किया।" (معجم اوسط ج٦ ص٩٧ حديث ٨١٣٣)

ऐ़ब की वज़ाह़त !

ह़ज़रते अलह़ाज मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने इस ह़दीसे पाक की जो वज़ाह़त फ़रमाई है उस से ह़ासिल होने वाले मदनी फूल पेशे ख़िदमत हैं : ❁ वोह ऐ़ब जो किसी मुसल्मान के ह़क़ से मुतअ़ल्लिक़ न हो और येह शख़्स उसे लोगों से छुपाना चाहता हो, बा'ज़ शारिह़ीन (या'नी ह़दीसों की शर्ह़ करने वाले उ़लमा) ने फ़रमाया कि इस से मुराद मुसल्मान मर्द या औ़रत का सत्र है या'नी किसी को नंगा देखे तो उसे कपड़ा पहना दे, हो सकता है कि दोनों ही मुराद हों ❁ इस त़रह़ कि (किसी का ऐ़ब देख कर) ख़ुद उस से कह दे कि देख ! आइन्दा ऐसी ह़रकत न करना वरना फिर तेरी ख़ैर न होगी और लोगों से (उस का ऐ़ब) छुपा ले ताकि तब्लीग़ भी हो जाए और मुसल्मान की पर्दापोशी भी लेकिन अगर येह शख़्स किसी (के) क़त्ल या (किसी को) नुक़्सान (पहुंचाने) की ख़ुफ़्या साज़िश कर रहा है तो ज़रूर इस की इत्तिलाअ़ उस (या'नी जिसे येह नुक़्सान पहुंचाना चाहता है) को कर दे ताकि वोह नुक़्सान से बच जावे या अगर येह शख़्स आ़दी मुजरिम बन चुका है तो इस का ए'लान कर दे। लिहाज़ा इस फ़रमाने आ़ली का येह मक़्सद नहीं कि ख़ुफ़्या चोर, क़ातिल के जुर्म छुपाओ, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का फ़रमान निहायत ही जामेअ़ होता है ❁ या'नी इस पर्दापोशी (या'नी ऐ़ब

छुपाने) का सवाब ऐसा है जैसे किसी ज़िन्दा दफ़्न शुदा बच्ची को क़ब्र से निकाल कर उस की जान बचा लेना क्यूं कि मुसल्मान की आबरू (या'नी इ़ज़्ज़त) उस की जान की त़रह़ क़ाबिले एह़तिराम है। बहर ह़ाल मुसल्मान की जाती हुई इ़ज़्ज़त बचाना बड़ा ही सवाब है मगर वोह क़ुयूद (या'नी वज़ाह़तें) ख़याल में रहें जो हम ने अ़र्ज़ कीं। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 570)

मुसल्मान कैसा होना चाहिये ?

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "एक मुसल्मान दूसरे मुसल्मान का भाई है, न उस पर ज़ुल्म करता है और न उसे बे यारो मददगार छोड़ता है। और जो अपने भाई की ह़ाजत (या'नी ज़रूरत) पूरी करे, **अल्लाह** पाक उस की ह़ाजत (या'नी ज़रूरत) पूरी करता है। और जो किसी मुसल्मान की तक्लीफ़ दूर करे, **अल्लाह** पाक क़ियामत की तक्लीफ़ों में से उस की तक्लीफ़ दूर फ़रमाएगा। और जो किसी मुसल्मान की **ऐ़बपोशी** करे (या'नी ऐ़ब छुपाए) तो **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन उस की **ऐ़बपोशी** फ़रमाए (या'नी ऐ़ब छुपाए)गा।" (مُسلِم ص۱۳۹۴ حدیث۶۵۸۰)

ऐ़ब छुपाओ, जन्नत पाओ

सह़ाबिये नबी ह़ज़रते अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ बयान करते हैं कि **अल्लाह** पाक के सब से आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो शख़्स अपने भाई का ऐ़ब देख कर उस की **पर्दापोशी** कर दे (या'नी छुपा दे) तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।"

(مُسند عَبد بن حُمَید ص۲۷۹ حدیث۸۸۵)

जब लड़ाई ठन जाती है

आपस की नाराज़ी के बाइस बसा अवक़ात एक दूसरे की ब कसरत **ग़ीबत** की जाती है। **ग़ीबत** गुनाहे कबीरा, ह़राम व जहन्नम में ले जाने वाला काम है। जब दिलों में नाराज़ी असर जमाती और आपस में लड़ाई ठन जाती है तो कभी **ग़ीबतों और तोह्मतों** का सैलाब उमड आता और ग़ीबत करने सुनने वालों को सूए जहन्नम हंकाता है। इस सिल्सिले में सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दो इर्शादात सुनिये और ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़िये :

﴾1﴿ ग़ीबत का अ़ज़ाब

मैं शबे मे'राज ऐसे लोगों के पास से गुज़रा जो अपने चेहरों और सीनों को तांबे के नाख़ुनों से छील रहे थे। मैं ने पूछा : ऐ जिब्राईल! येह कौन लोग हैं ? अ़र्ज़ की : "येह लोगों का गोश्त खाते (या'नी उन की ग़ीबत करते) और उन की इ़ज़्ज़त ख़राब करते थे।" (ابوداوٗد ج ٤ ص ٣٥٣ حديث ٤٨٧٨)

ग़ीबत की ता'रीफ़ (DEFINITION)

किसी (ज़िन्दा या मुर्दा) शख़्स के पोशीदा (या'नी छुपे हुए) ऐ़ब को (जिस को वोह दूसरों के सामने ज़ाहिर होना पसन्द न करता हो) उस की बुराई करने के तौ़र पर ज़िक्र करना। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 532)

﴾2﴿ तोहमत का अ़ज़ाब

"**जो** शख़्स किसी मुसल्मान पर "बोहतान" (या'नी तोहमत) लगाए (या'नी ऐसी चीज़ कहे जो उस में नहीं) तो **अल्लाह** पाक उसे रद्ग़तुल ख़बाल में रखेगा यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए।" (اَبوداوٗد ج٣ ص ٤٢٧ حديث ٣٥٩٧) (रद्ग़तुल ख़बाल जहन्नम में एक मक़ाम है जहां दोज़ख़ियों का ख़ून और पीप जम्अ़ होगा)

बयान की हुई ह़दीसे पाक के इस हिस्से : "यहां तक कि वोह अपनी कही हुई बात से निकल जाए" का मत़लब बयान करते हुए ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : या'नी उस गुनाह से तौबा के ज़रीए़ निकल जाए, या जिस अ़ज़ाब का वोह ह़क़दार हो चुका है उसे भुगत्ने के बा'द (तोहमत के गुनाह से) पाक हो जाए। (اشعةُ اللّمعات ج٣ص٢٩٠)

बद दुआ़ देना इन्तिक़ाम है

याद रखिये ! अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाले के ह़क़ में बद दुआ़ कर देना इन्तिक़ाम (या'नी बदला लेना) है, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने ज़ालिम पर बद दुआ़ की उस ने अपना बदला ले लिया।" (ترمذی ج٥ص٣٢٤حديث٣٥٦٣)

झगड़े से बचने की फ़ज़ीलत

अपने नफ़्स की ख़ातिर झगड़ने से मुसल्मान को बचना चाहिये ह़त्ता कि कोई दिल आज़ारी कर बैठे तब भी बह़्सो तकरार से बच कर दर गुज़र से काम लेते हुए झगड़े से दूर रहने ही में भलाई है। **फ़रमाने आख़िरी नबी** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "जो ह़क़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता मैं उस के लिये जन्नत के (अन्दरूनी) कनारे में एक घर का ज़ामिन हूं।"

(ابوداؤد ج٤ص٣٣٢ حديث ٤٨٠٠)

मुसल्मान किसे कहते हैं ?

मुसल्मानों को आपस में झगड़ने से क्या वासित़ा ! येह तो एक दूसरे के मुह़ाफ़िज़ होते हैं चुनान्चे **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : (पूरा) **मुसल्मान** वोह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसल्मान को तक्लीफ़ न पहुंचे

और (कामिल या'नी पूरा) **मुहाजिर** वोह है जो उस चीज़ को छोड़ दे जिस से **अल्लाह** पाक ने मन्अ़ फ़रमाया है। (بُخاری ج۱ ص۱۵ حدیث ۱۰)

इस ह़दीसे पाक की वज़ाह़त में ह़ज़रते अलह़ाज मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि "**कामिल** (या'नी पूरा) **मुसल्मान** वोह है जो लुग़तन शर्अ़न (या'नी लुग़वी व शर्ई ए'तिबार से) हर त़रह़ मुसल्मान हो वोह मोमिन है जो किसी मुसल्मान की ग़ीबत न करे, गाली, त़ा'ना, चुग़ली वग़ैरा न करे, किसी को न मारे पीटे, न उस के ख़िलाफ़ कुछ तह़रीर करे।" मज़ीद फ़रमाते हैं कि "**कामिल मुहाजिर** वोह मुसल्मान है जो तर्के वत़न के साथ तर्के गुनाह भी करे, या गुनाह छोड़ना भी लुग़तन (या'नी लुग़वी मा'ना के लिह़ाज़ से) हिजरत है जो हमेशा जारी रहेगी।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 29)

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुसल्मान के लिये जाइज़ नहीं कि दूसरे मुसल्मान की त़रफ़ आंख से इस त़रह़ इशारा करे जिस से उसे तक्लीफ़ पहुंचे। (اَلزُّهد لِابنِ المُبارَك ص۲٤۰ حديث ٦٨٩) एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : किसी मुसल्मान को जाइज़ नहीं कि वोह किसी मुसल्मान को ख़ौफ़ज़दा करे। (ابوداؤد ج٤ ص۳۹۱ حدیث ٥٠٠٤)

ईज़ाए मुस्लिम

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन हुक़ूक़ुल इ़बाद का मुआ़मला बड़ा नाज़ुक है, मगर आह ! आज कल बेबाकी का दौरदौरा है, अ़वाम तो अ़वाम बा'ज़ अवक़ात ख़्वास नज़र आने वाले भी इस की त़रफ़ से ग़ाफ़िल रहते हैं, ग़ुस्से के (बे जा इज़्हार) का मरज़ आ़म है, ग़ुस्से की वज्ह से अक्सर

ख़्वास (या'नी ख़ास साहिबान) भी लोगों की **दिल आज़ारी** कर बैठते हैं और इस गुनाह की त़रफ़ उन की बिल्कुल तवज्जोह नहीं होती। यक़ीनन किसी मुसल्मान की बिला वज्हे शर्ई दिल आज़ारी कबीरा गुनाह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''مَنْ اٰذٰى مُسْلِمًا فَقَدْ اٰذَانِیْ، وَمَنْ اٰذَانِیْ فَقَدْ اٰذَى اللّٰهَ'' या'नी जिस ने (बिला वज्हे शर्ई) किसी मुसल्मान को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** पाक को ईज़ा दी। (معجم اوسط ج ٢ ص ٣٨٧ حديث ٣٦٠٧)

अल्लाह पाक व रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ईज़ा (या'नी तक्लीफ़) देना कुफ़्फ़ार का बहुत ही बुरा त़रीक़ा है, **अल्लाह** करीम पारह 22 **सूरतुल अह़ज़ाब** आयत 57 में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ وَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۵۷﴾

(پ٢٢، الاحزاب: ٥٧)

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इ़रफ़ान : बेशक जो **अल्लाह** और उस के रसूल को ईज़ा देते हैं उन पर दुन्या और आख़िरत में **अल्लाह** ने ला'नत फ़रमा दी है और **अल्लाह** ने उन के लिये रुस्वा कर देने वाला अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।

बुरा चरचा करना बाइ़से अ़ज़ाब है

ख़ास कर मुबल्लिग़ और ख़ुसूसन बिल ख़ुसूस सुन्नी आ़लिम की किसी ख़ामी या ख़त़ा को किसी पर ज़ाहिर करना, लोगों में उस को आ़म करना नेकी की दा'वत और इस्लाम की तब्लीग़ के मुआ़मले में बहुत बुरा और दुन्या व आख़िरत के लिये सख़्त नुक़्सान देह है।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : और अहले सुन्नत से ब तक़्दीरे इलाही जो ऐसी लग़्ज़िशे फ़ाह़िश (या'नी सख़्त भूल) वाक़ेअ़ हो उस का इख़्फ़ा (छुपाना) वाजिब है कि مَعَاذَ اللّٰه लोग उन से बद ए'तिक़ाद (या'नी बदज़न) होंगे तो जो नफ़्अ़ उन की तक़रीर और तह़रीर से इस्लाम व सुन्नत को पहुंचता था उस में ख़लल वाक़ेअ़ होगा, इस की इशाअ़त (या'नी आ़म करना), इशाअ़ते फ़ाह़िशा (या'नी बुरा चरचा करना) है और इशाअ़ते फ़ाह़िशा (या'नी बुरा चरचा करना) ब नस्से क़ुरआने अ़ज़ीम ह़राम। قَالَ اللّٰهُ تَعالٰی (या'नी **अल्लाह** पाक फ़रमाता है) :

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ (پ۱۸، النور:۱۹)

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक जो लोग चाहते हैं कि मुसल्मानों में बे ह़याई की बात फैले उन के लिये दुन्या और आख़िरत में दर्दनाक अ़ज़ाब है।

ख़ुसूसन जब कि वोह बन्दगाने ख़ुदा ह़क़ की त़रफ़ बे किसी उ़ज़्रो तअम्मुल के (या'नी ह़ीले बहानों के बग़ैर) रुजूअ़ फ़रमा चुके। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "مَنْ عَيَّرَ اَخَاهُ بِذَنْبٍ لَّمْ يَمُتْ حَتّٰى يَعْمَلَهٗ" जिस ने अपने भाई को किसी गुनाह की वज्ह से आ़र दिलाया (या'नी शरमिन्दा किया) वोह मरने से क़ब्ल उसी गुनाह में मुब्तला होगा।

[ترمذی ج٤ ص٢٢٦ حدیث٢٥١٣] (फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 594)

बा'ज़ लोग बहुत झगड़ालू त़बीअ़त के मालिक होते हैं, ख़्वाह म ख़्वाह तन्क़ीदें करते, बाल की खाल उतारते और बात बात पर फ़सादात

बरपा करते और मुसल्मानों के लिये ईज़ा का बाइस बनते रहते हैं, ऐसे लोगों को डर जाना चाहिये कि पारह 30 **सूरतुल बुरूज** की 10वीं आयते मुबारका में **अल्लाहु रब्बुल इबाद** का इर्शाद है :

اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ﴿۱۰﴾

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक जिन्हों ने मुसल्मान मर्दों और मुसल्मान औरतों को आज़्माइश में मुब्तला किया फिर तौबा न की उन के लिये जहन्नम का अज़ाब है और उन के लिये आग का अज़ाब है।

फ़ितना जगाने वाले पर ला'नत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "फ़ितना सोया हुवा होता है उस पर **अल्लाह** पाक की ला'नत जो उस को बेदार करे।"

(اَلْجامِعُ الصَّغِير ص ۳۷۰ حدیث ۵۹۷۵ ، تاریخ قزوین للرافعی ج ۱ ص ۲۹۱)

दुश्मन को दोस्त बनाने का कुरआनी नुस्ख़ा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह उसूल याद रखिये कि नजासत को नजासत से नहीं, पानी से पाक किया जाता है लिहाज़ा अगर कोई आप के साथ नादानी भरा सुलूक करे तब भी आप उस के साथ महब्बत भरे सुलूक की कोशिश फ़रमाइये اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْكَرِيْم इस के उ़म्दा नताइज देख कर आप का कलेजा ज़रूर ठन्डा होगा।

ख़ुदाए पाक की क़सम ! वोह लोग बड़े ख़ुश नसीब हैं जो ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए ज़ुल्म करने वाले को मुआ़फ़ कर देते और बुराई को भलाई से टालते हैं। बुराई को भलाई से टालने की तरग़ीब कुरआने

करीम में मौजूद है, चुनान्चे पारह 24 **सूरए** حٰمٓ السَّجْدَة की 34वीं आयते करीमा में इर्शाद होता है :

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَكَ وَ بَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ﴿۳۴﴾

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : बुराई को भलाई के साथ दूर कर दो तो तुम्हारे और जिस शख़्स के दरमियान दुश्मनी होगी वोह उस वक़्त ऐसा हो जाएगा कि जैसे वोह गहरा दोस्त है।

हुस्ने सुलूक का नतीजा

हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** शरीफ़ में बुराई को भलाई से टालने का तरीक़ा बताते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : मसलन ग़ुस्से को सब्र से, जह्ल को हिल्म (या'नी जहालत को नरमी) से, बद सुलूकी को अ़फ़्व (व दर गुज़र) से कि अगर कोई तेरे साथ बुराई करे तो मुआ़फ़ कर। (तो) इस ख़स्लत का नतीजा येह होगा कि दुश्मन दोस्तों की त़रह़ महब्बत करने लगेंगे। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत अबू सुफ़्यान के हक़ में नाज़िल हुई कि बा वुजूद इन की शिद्दते अ़दावत (या'नी सख़्त दुश्मनी) के नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के साथ सुलूके नेक किया, इन की साहि़ब ज़ादी (ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) को अपनी ज़ौजिय्यत का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाया। इस का नतीजा येह हुवा कि वोह **सादिक़ुल मह़ब्बत** या'नी सच्चे मह़ब्बत करने वाले जां निसार (सह़ाबी) हो गए।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 884, التفسير الوسيط للواحدی ج٤ ص٣٦)

बुराई को भलाई से टालने की दो मिसालें

﴾1﴿ आ़म मुआ़फ़ी का ए'लान

फ़त्ह़े मक्कए मुकर्रमा के मौक़अ़ पर वहां के सरदाराने क़ुरैश और आ़म लोग ह़रमे का'बा में जम्अ़ थे, येह लोग वोही थे जो मुसल्सल 21 बरस सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जानी दुश्मन रहे थे, सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबा व सह़ाबियात عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को बहुत ज़ियादा सताया था, **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को हिजरत कर जाने पर मजबूर कर दिया था, येह वोही ज़ालिम लोग थे जिन्हों ने इस्लाम व मुस्लिमीन को ख़त्म करने के लिये ईमान वालों पर ह़म्ले किये और कई लड़ाइयां लड़ चुके थे और आज येह लोग सुल्त़ाने दो जहान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़बान से अपनी क़िस्मत का फ़ैसला सुनने के लिये सर झुकाए ह़ाज़िर थे। **सरकारे दो आ़लम** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन लोगों से फ़रमाया : "तुम्हारा क्या ख़याल है ! मैं तुम से कैसा सुलूक करने वाला हूं !" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "अच्छा सुलूक फ़रमाएंगे।" रह़मत वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं वोह कहूंगा जो यूसुफ़ (عَلَيْهِ السَّلَام) ने कहा था :

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ۫ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۹۲﴾

(پ۱۳، یوسف:۹۲)

आसान तरजमए क़ुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : आज तुम पर कोई मलामत नहीं, **अल्लाह** तुम्हें मुआ़फ़ करे और वोह सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है।

(السنن الکبری للبیہقی ج۹ ص۱۹۹ حدیث۱۸۲۷۵ ملخّصاً)

ख़ार बिछाने वालों को भी फूलों का इन्आम दिया

आप ने ख़ून के प्यासों को भी राहत का पैग़ाम दिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ على محمَّد

﴾2﴿ मारने वाले को मुआ़फ़ कर दिया

करोड़ों मालिकिय्यों के अ़ज़ीम पेशवा और मश्हूर आ़शिक़े रसूल ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर मदीने शरीफ़ का गवर्नर जा'फ़र बिन सुलैमान नाराज़ हुवा और **बत़ौरे सज़ा** ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को कोड़े लगाए गए (जब जब कोड़ा लगता आप की ज़बाने पाक से येह दुआ़ निकलती : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْن या'नी : **या अल्लाह** पाक ! इन लोगों को मुआ़फ़ फ़रमा दे कि येह ह़क़ीक़त से बे ख़बर हैं।[1]) यहां तक कि आप बेहोश हो गए। लोग इसी ह़ालत में आप को घर लाए, होश में आते ही आप ने फ़रमाया : **"लोगो ! गवाह रहो कि मैं ने अपने मारने वाले को मुआ़फ़ कर दिया।"** (الشفا بتعريف حقوق المصطفٰى ج ٢ ص ٥١) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

सलाम उन पर बराए नफ़्स जो बदला न लेते थे

सलाम उन पर जो दुश्मन को दुआ़ए ख़ैर देते थे

मुआ़फ़ी के मुतअ़ल्लिक़ इर्शादे इलाही

अ़फ़्वो दर गुज़र के मुतअ़ल्लिक़ पारह 9 **सूरतुल आ'राफ़** की आयत 199 में इर्शाद होता है :

---

(1): تَرتِيبُ المَدارِك للقاضى عِياض ج ١ ص ١٢٥۔

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : ऐ हबीब ! मुआफ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

जन्नत पाने के तीन नुस्ख़े

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ कहते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तीन बातें जिस शख़्स में होंगी **अल्लाह** पाक (क़ियामत के दिन) उस का हिसाब बहुत आसान तरीक़े से लेगा और उस को अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। मैं ने अर्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह बातें कौन सी हैं ? फ़रमाया : ﴾1﴿ जो तुम से तअल्लुक़ तोड़े तुम उस से मिलाप करो (या'नी तअल्लुक़ जोड़ो) ﴾2﴿ जो तुम्हें महरूम करे तुम उसे अता करो और ﴾3﴿ जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उस को मुआफ़ कर दो। (معجم اَوسَط ج ۱ ص ۲۶۳ حدیث ۹۰۹)

बहादुरी

हज़रते अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद मुक़री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अपने दुश्मन से अच्छा सुलूक करना, ना पसन्दीदा शख़्स पर माल ख़र्च करना और जो शख़्स दिल को अच्छा न लगे उस से अच्छे तअल्लुक़ात रखना बहादुरी है।" (طبقات الصوفیه للسلمی ص ۳۷۸)

अल्लाह करीम सुल्ह करवाएगा

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे दो उम्मती **अल्लाह** पाक की बारगाह में दो ज़ानू गिर पड़ेंगे, एक अर्ज़ करेगा : "**या अल्लाह** पाक !

इस से मेरा इन्साफ़ दिला कि इस ने मुझ पर ज़ुल्म किया था।" **अल्लाह** पाक मुद्दई (या'नी दा'वा करने वाले) से फ़रमाएगा : अब येह (या'नी जिस पर दा'वा किया गया है वोह) क्या करे, इस के पास तो कोई नेकी बाक़ी नहीं। मज़्लूम (मुद्दई) अ़र्ज़ करेगा : मेरे गुनाह इस के ज़िम्मे डाल दे। इतना इर्शाद फ़रमा कर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रो पड़े। फ़रमाया : वोह दिन बहुत अ़ज़ीम दिन होगा, क्यूं कि उस वक़्त (या'नी बरोज़े क़ियामत) हर एक इस बात का ज़रूरत मन्द होगा कि उस का बोझ हलका हो। **अल्लाह** पाक मज़्लूम (या'नी मुद्दई) से फ़रमाएगा : देख तेरे सामने क्या है ? वोह अ़र्ज़ करेगा : ऐ रब ! मैं अपने सामने सोने के शह्र और मह़ल्लात देख रहा हूं जो मोतियों से आरास्ता हैं, येह किस नबी या सिद्दीक़ या शहीद के लिये हैं ? **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : येह उस के लिये हैं जो इन की क़ीमत अदा करे। बन्दा अ़र्ज़ करेगा : इन की क़ीमत कौन अदा कर सकता है ? **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : तू अदा कर सकता है। वोह अ़र्ज़ करेगा : वोह किस त़रह़ ? **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : इस त़रह़ कि तू अपने भाई के हुक़ूक़ मुआ़फ़ कर दे। बन्दा अ़र्ज़ करेगा : **या अल्लाह** पाक ! मैं ने हुक़ूक़ मुआ़फ़ किये। **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : अपने भाई का हाथ पकड़ो और दोनों इकठ्ठे जन्नत में चले जाओ। फिर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **अल्लाह** पाक से डरो और मख़्लूक़ में सुल्ह़ करवाओ क्यूं कि **अल्लाह** पाक भी क़ियामत के दिन मुसल्मानों में सुल्ह़ करवाएगा।

(اَلْمُستَدرَك ج ٥ ص ٧٩٥ حديث ٨٧٥٨)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बयान की गई ह़दीसे पाक मुसल्मानों के दरमियान सुल्ह़ (PEACE) करवाने की सुन्नते इलाही और सुल्ह़ की तरग़ीब

दिलाने की सुन्नते नबविय्या की ख़ुश्बूओं से महक रही है। **अल्लाह** करीम आपस में सुल्ह़ सफ़ाई करवाने की तरग़ीब दिलाते हुए पारह 26 **सूरतुल हुजुरात** की दसवीं आयते करीमा में इर्शाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝۱۰

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : सिर्फ़ मुसल्मान भाई भाई हैं तो अपने दो भाइयों में सुल्ह़ करा दो और **अल्लाह** से डरो ताकि तुम पर रह़मत हो।

सुल्ह़ करवाना सुन्नत है

हुक्मे कुरआनी के साथ साथ **अल्लाह** पाक के सब से आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सुन्नत भी हमें सुल्ह़ करवाने का अ़मली नमूना अ़त़ा फ़रमा रही है। चुनान्चे ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़्ह़ा 949 पर लिखते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (सुवारी के जानवर) दराज़ गोश पर कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि अन्सार के पास से गुज़र हुवा, वहां कुछ देर तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया (या'नी ठहरे), इस जगह दराज़ गोश ने पेशाब किया तो इब्ने उबय ने नाक बन्द कर ली। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दराज़ गोश का पेशाब तेरे मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तो तशरीफ़ ले गए। उन दोनों की बात बढ़ गई और दोनों की क़ौमें आपस में लड़ गईं और हाथापाई तक नौबत पहुंची। सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ लाए और दोनों में सुल्ह़ करवा दी। इस मुआ़मले में येह आयत नाज़िल हुई :

وَ اِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَیْنَهُمَا (پ۲٦، الحجرات:۹)

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और अगर मुसल्मानों के दो गुरौह आपस में लड़ पड़ें तो तुम उन में सुल्ह करा दो।

(خزائن العرفان ص۹٤۹، تفسیرِ کشاف ج٤ ص٣٦٤)

एक और मक़ाम पर सुल्ह की तरग़ीब दिलाते हुए पारह 5 **सूरतुन्निसाअ** की आयत 128 में इर्शाद होता है :

وَ الصُّلْحُ خَیْرٌ ؕ وَ اُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ

आसान तरजमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और सुल्ह बेहतर है और दिल को लालच के क़रीब कर दिया गया है।

सुल्ह करवाने के लिये तशरीफ़ ले गए

बुख़ारी शरीफ़ में है : सहाबिये रसूल ह़ज़रते सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه कहते हैं : कुबा में बनी अ़म्र बिन औ़फ़ के लोगों में कुछ झगड़ा हो गया था तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने कुछ सहाबा के साथ उन के दरमियान सुल्ह करवाने के लिये तशरीफ़ ले गए। (بخاری ج۱ ص۱۰٤۱ حدیث ۱۲۱۸)

इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने सुल्ह करवाई

इन आयाते मुबारका पर अ़मल और सुल्ह करवाने की सुन्नत के ख़ुशनुमा रंग से हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की मुबारक सीरत ख़ूब रंगी हुई है। येह मुबारक ह़ज़रात मुसल्मानों में सुल्ह व अम्न के **फूल** खिलाने के

लिये बड़ी से बड़ी क़ुरबानी देने के लिये तय्यार रहते। चुनान्चे इस की एक रोशन मिसाल, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं कि जिन के बारे में हमारे रह़मत वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं ग़ैब की ख़बर देते हुए इर्शाद फ़रमा दिया था : "मेरा येह बेटा सय्यिद (या'नी सरदार) है और **अल्लाह** पाक इस के ज़रीए़ मुसल्मानों के दो गुरौहों (या'नी दो ग्रूप्स) में सुल्ह़ करवाएगा।" (بُخاری ج۲ص۵۰۹ حدیث ۳۶۲۹)

चुनान्चे आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने वालिदे माजिद मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शहादत के बा'द **6 माह** और चन्द दिन मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ रहे और फिर मुसल्मानों के दो गुरौहों (या'नी दो ग्रूप्स) में सुल्ह़ करवाने के लिये ख़िलाफ़त जैसे अ़ज़ीम मन्सब से ख़ुद ही फ़राग़त ह़ासिल फ़रमाई।

नफ़्ल नमाज़ व ख़ैरात से अफ़्ज़ल काम

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन इस्लाह़ बैनन्नास (या'नी लोगों के दरमियान सुल्ह़ करवाओ) के मुत़ाबिक़ अ़मल करना एक इन्तिहाई अ़ज़ीम काम है। चुनान्चे ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कहते हैं कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम्हें रोज़े, सदक़ा और नमाज़ से अफ़्ज़ल काम की ख़बर न दूं ? सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं। फ़रमाया : वोह काम आपस में सुल्ह़ करवा देना है। और आपस के मुआ़मले का बिगाड़ मूंडने वाला (काम) है। (ترمذی ج٤ ص۲۲۸ حدیث ۲۵۱۷)

शर्हे ह़दीस : मिरआत में है : यहां नफ़्ली रोज़े, नफ़्ली सदक़ा (और) नफ़्ली नमाज़ मुराद है न कि फ़राइज़। और इस हिस्से : "और आपस के मुआ़मले का बिगाड़ मूंडने वाला (काम) है" की वज़ाह़त में फ़रमाते हैं : या'नी मुसल्मानों के आपस के तअ़ल्लुक़ात ख़राब कर देना, उन में दुश्मनी डाल देना, भलाइयों, सवाबों को फ़ना (या'नी ख़त्म) कर देने वाली चीज़ है, इस की नुहूसत से इन्सान रोज़ा, नमाज़ की लज़्ज़त बल्कि ख़ुद रोज़े, नमाज़ वग़ैरा दीगर इबादात से मह़रूम हो जाता है। (मिरआत, जि. 6, स. 614 से ख़ुलासा)

हर लफ़्ज़ के बदले सवाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स दो आदमियों के दरमियान सुल्ह़ कराए, **अल्लाह** पाक उस के मुआ़मलात दुरुस्त कर देता है और उसे हर लफ़्ज़ के बदले एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और वोह यूं वापस आता है कि उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो चुके होते हैं।

(الترغیب والترهیب للاصبهانی ج۱ ص۱۰۰ حدیث ۱۸۶)

अच्छा इस्लामी भाई कौन ?

देखा आप ने ! लोगों में सुल्ह़ करवा देना कैसा फ़ज़ीलतो अ़ज़मत वाला काम है। तो वोह कितना अच्छा और भला इन्सान है जो अपने छोटों पर शफ़्क़त करता और अपने बड़ों की इ़ज़्ज़त करता, और हर किसी की भलाई चाहता और सब की ख़ैर ख़्वाही करते हुए अपने पाकीज़ा किरदार व नेक गुफ़्तार (या'नी अच्छी गुफ़्तगू) से मुसल्मानों की आपसी नाराज़ियां दूर करवाने और उन में सुल्ह़ करवाने के लिये हमेशा कोशिश करता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب   صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

“सुल्ह़ में ख़ैर ही ख़ैर है” के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से 16 निय्यतें

दो मदनी फूल **: (1)** आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है **(2)** जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा। प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर आप ने येह रिसाला **“नाराज़ियों का इलाज”** पूरा पढ़ लिया है तो ग़ालिबन दिल ने चोट खाई होगी, हिम्मत कीजिये और **अल्लाह** पाक की रिज़ा की ख़ातिर नीचे लिखी हुई 16 निय्यतें कर लीजिये कि फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है **: نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ** । या'नी “मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।” (مُعْجَم كَبِير ج٦ ص١٨٥ حديث٥٩٤٢)

(1) अपने नाराज़ इस्लामी भाइयों और (2) रूठे हुए रिश्तेदारों से ख़ुद आगे बढ़ कर रिज़ाए इलाही के लिये सुल्ह़ कर लूंगा (3) पिछली ख़त़ाओं पर किसी को शरमिन्दा नहीं करूंगा (4) सुनी सुनाई बातों में आ कर किसी से तअ़ल्लुक़ात ख़राब नहीं कर लूंगा (5) बद गुमानियों (6) ऐ़ब दरियों (7) दिल आज़ारियों (8) ग़ीबतों (9) चुग़लियों (10) इल्ज़ाम तराशियों और शमातत (या'नी किसी के नुक़्सान पर ख़ुश होने) से बचता रहूंगा (11) ग़ीबत व चुग़ली सुनने से भी बचूंगा (12) जहां तक हो सका इस्लामी भाइयों में सुल्ह़ करवाने की कोशिश करूंगा (13) जिस जिस ने मेरी दिल आज़ारी की उस को **अल्लाह** करीम की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ करता हूं (14) जो कोई आइन्दा मेरा दिल दुखाए उस को भी अपना ह़क़ पेशगी मुआ़फ़ करता हूं (याद

रहे ! पेशगी मुआ़फ़ कर देने वाले मुसल्मान की बिला इजाज़ते शर्ई दिल आज़ारी करने वाला ख़ुदाए ज़ुल जलाल की ना फ़रमानी के वबाल में बहर ह़ाल गिरिफ़्तार होगा) (15) जो मेरे साथ बुराई करेगा हुक्मे क़ुरआनी की इत़ाअ़त करते हुए उस के साथ भलाई करने की कोशिश करूंगा (16) येह रिसाला (नाराज़ियों का इलाज) कम अज़ कम 12 अ़दद तक़्सीम करूंगा (ख़ुसूसन अपने रिश्तेदारों और उन मुसल्मानों तक पहुंचाइये जिन की आपस में नाराज़ियां हों)

या अल्लाह पाक ! हम सब को प्यार मह़ब्बत के साथ रहने और शरीअ़त के दाएरे में रहते हुए नाराज़ मुसल्मानों में सुल्ह़ सफ़ाई करवाने का सवाब कमाते रहने की सआ़दत नसीब फ़रमा। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो
कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या ईलाही !

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

25 ज़ी क़ा'दह शरीफ़ 1444 सि.हि.
15-06-2023

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूं (या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشكوال)

फ़ेहरिस

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	बद दुआ देना इन्तिक़ाम है	12
इमामे हसन व इमामे हुसैन की सुल्ह का ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ	1	झगड़े से बचने की फ़ज़ीलत	12
जन्नत की तरफ़ पहल करने का नुस्ख़ा	2	मुसल्मान किसे कहते हैं ?	12
शैतान आपस में लड़वाता है	3	ईज़ाए मुस्लिम	13
सब सुल्हो सफ़ाई के साथ रहें	4	बुरा चरचा करना बाइसे अ़ज़ाब है	14
गुस्सा फ़साद की जड़ है	4	फ़ितना जगाने वाले पर ला'नत	16
गुस्से की ता'रीफ़	4	दुश्मन को दोस्त बनाने का कुरआनी नुस्ख़ा	16
जहन्नम का मख़्सूस दरवाज़ा	5	हुस्ने सुलूक का नतीजा	17
मालिक बिन दीनार के गुस्सा पी जाने की बरकत (वाक़िआ)	5	बुराई को भलाई से टालने की दो मिसालें	18
गुस्से से बुग़्ज़ो कीना पैदा होता है	6	(1) आम मुआफ़ी का ए'लान	18
कीने की ता'रीफ़	6	(2) मारने वाले को मुआफ़ कर दिया	19
मग़्फ़िरत में रुकावट	7	मुआफ़ी के मुतअ़ल्लिक़ इर्शादे इलाही	19
अ़दावत रखने वाले की शामत	7	जन्नत पाने के तीन नुस्ख़े	20
बिला वज्हे शरई क़त्ए तअ़ल्लुक़ गुनाह है	7	बहादुरी	20
तीन क़िस्म के अफ़राद	8	**अल्लाह** करीम सुल्ह करवाएगा	20
ऐब छुपाने की फ़ज़ीलत	8	सुल्ह करवाना सुन्नत है	22
ऐब की वज़ाहत !	9	सुल्ह करवाने के लिये तशरीफ़ ले गए	23
मुसल्मान कैसा होना चाहिये ?	10	इमामे हसन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने सुल्ह करवाई	23
ऐब छुपाओ, जन्नत पाओ	10	नफ़्ल नमाज़ व ख़ैरात से अफ़्ज़ल काम	24
जब लड़ाई ठन जाती है	11	हर लफ़्ज़ के बदले सवाब	25
ग़ीबत का अ़ज़ाब	11	अच्छा इस्लामी भाई कौन ?	25
ग़ीबत की ता'रीफ़	11	16 निय्यतें	26
तोहमत का अ़ज़ाब	11	मआख़िज़ो मराजेअ़	29

येह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

मआख़िज़ो मराजेअ़

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن کریم		الترغیب والترہیب	دار الحدیث قاہرۃ
تفسیر وسیط	دار المصور عربی مصر	جامع صغیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیر کشاف	مکتب الاعلام الاسلامی ایران	اشعۃ اللمعات	
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ	مراٰۃ المناجیح	
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	تذکرۃ الاولیاء	انتشارات گنجینہ تہران
مسلم	دار الکتاب العربی بیروت	الشفا	دار الکتب العلمیۃ بیروت
ابوداؤد	دار احیاء التراث العربی بیروت	طبقات الصوفیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	تاریخ قزوین	دار الکتب العلمیۃ بیروت
ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	ترتیب المدارک	دار الکتب العلمیۃ بیروت
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	حدیقہ ندیہ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسند ابویعلٰی	دار الکتب العلمیۃ بیروت	ذخائر العقبٰی	مکتبۃ الصحابۃ جدۃ
مسند عبد بن حمید	عالم الکتب بیروت	المفردات	دار القلم دمشق
معجم اوسط	دار الفکر بیروت	فتاوٰی رضویہ	
سنن کبریٰ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ
مستدرک	دار المعرفۃ بیروت	حیات اعلیٰ حضرت	مکتبۃ المدینہ
الزہد لابن المبارک	دار الکتب العلمیۃ بیروت	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घरों में ह़स्बे तौफ़ीक़ रिसाले या मदनी फूलों के पेम्फ़लेट हर माह पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ۔

ग़ुर्बत पर सब्र का इन्आ़म

ह़ज़रते ह़सन बिन ह़बीब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه (वफ़ात: 197 हिजरी) को किसी ने वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : غَفَرَلِيْ بِصَبْرِيْ عَلَى الْفَقْرِ فِي الدُّنْيَا या'नी मुझे दुन्या में फ़क़्र (या'नी तंगदस्ती) पर सब्र की वज्ह से बख़्श दिया।

(الصبر والثواب علیہ لابن ابی الدنیا، قول نمبر92)

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570
Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372
Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200
Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025